मूल्यांकन का मूल्यांकन

डेविड ऑसबरॉ

अनुवाद : रोहित धनकर

शिक्षण की मूल्यांकन-प्रक्रिया ऐसा आइना है जिसमें उस शिक्षण-प्रणाली के पीछे रही सोच की गंभीरता या छिछलेपन का अक्स देखा जा सकता है। भारतीय शिक्षा-व्यवस्था की मौजूदा मूल्यांकन प्रणाली को डेविड 'घनचक्कर की पहेली' योजना कहते हैं । इसकी व्यावहारिक परिणति इस वृतान्त में उजागर होती है ; ग्रैडगाइंड महाशय कहते हैं, ''हमें इन लड़कियों को तथ्यों के अलावा कुछ नहीं पढ़ाना चाहिए।'' परिणामस्वरूप लुइसा तथ्यों की शिक्षा प्राप्ति व असफल वैवाहिक जीवन के बाद अपने पिता से कहती है, ''आपने यदि मुझे अपनी कल्पनाशक्ति का कुछ भी अभ्यास करने दिया होता तो मैं आज लाखों गुणा ज्यादा बुद्धिमान होती ।'' यह लेख 1980 के आसपास लिखा गया लगता है । पर इसमें न्यूनतम अधिगम स्तर की पदचाप साफ सुनाई दे रही है । और यह इसी खतरे की तरफ इशारा करता हुआ लगता है ।

मूल्यांकन को शीघ्रातिशीघ्र हमारे शिक्षा-तन्त्र की खिड़कियों से बाहर फेंक देना चाहिये । मूल्यांकन के हर पहलू को, मूल्यांकन शोध को, कार्यान्वयन को, मूल्यांकनकर्त्ताओं के प्रशिक्षण तथा कार्यशालाओं को, अधिकाधिक दुष्ट मूल्यांकन विधियों की ईजाद में लगे मूल्याकन-भक्तों से भरे बड़े-बड़े भवनों को अर्थात् मूल्यांकन की सम्पूर्ण प्रक्रिया को, इसके संपूर्ण साज-सामान को, ठीक उसी तरह बाहर फेंक देना चाहिये जैसे उन्नीसवीं सदी के लन्दन में शयनागारों की खिड़कियों से चेम्बरपोट्स (मूत्रपात्र) खाली किये जाते थे ।

घनचक्कर की पहेली योजना

शाला-शिक्षण के स्तर में विगत तीस वर्षों से चल रही सतत् गिरावट के कारणों में मूल्यांकन सर्वाधिक शक्तिशाली कारण रहा है। मूल्यांकन अपनी अंक प्रदान करने की प्रक्रिया को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाने की सनक तथा बालकों की कोमल बुद्धि को परम अनावश्यक जानकारी के टुकड़ों से भरने की अनबुझ प्यास के कारण एक भारी भरकम 'घनचक्कर की पहेली योजना' बन कर रह गया है। (प्रश्नों के कुछ उदाहरण हैं: स्वेज नहर किसने बनाई ? 19 नवम्बर को सूर्य कहां होता है ? हेर कौन था ? उसके उपकरण के बारे में क्या जानते हो ?) इन सनकी पहेलियों के विजेताओं को भारतीय प्रशासनिक सेवाओं के माध्यम से स्वर्ग का नि:शुल्क प्रवेश-पत्र मिलता है । दूसरे स्थान पर रहने वालों को तकनीकी संस्थानों तथा उच्च श्रेणी के व्यवस्थापकीय पदों के माध्यम से शोधन-स्थानों का प्रवेश-पत्र मिलता है । बाकी लोगों को बिना स्वर्ग या शोधन-स्थान पहुंचे, चलते रहने की अनुमति मिलती है ।

लेकिन कैसे कहा जा सकता है कि इस दु:खान्तिका का मुख्य खलनायक मूल्यांकन ही है ? मूल्यांकन से तो बालकों की योग्यताओं और उपलब्धियों का पता चलता है ! यह तो छात्रों की कार्य-क्षमता को सही-सही नापने का पैमाना प्रस्तुत करता है !! यह तो एक सशक्त अभिप्रेरण है जो बच्चे को अधिकाधिक अध्ययनशील बनाता है !!! ये मूल्यांकन-विशेषज्ञों के तर्क हैं । मूल्यांकन के इन तथाकथित फायदों की जांच शीघ्र ही की जा सकती है ।

पहली बात, मुश्किल से ही कोई परीक्षा बालकों की योग्यताओं व उपलब्धियों का, इन शब्दों के सही अर्थों में ठीक-ठीक चित्र उपस्थित कर पाती है । परीक्षा केवल छात्र की स्मरण-शक्ति की ही जांच करती है, न कि इसकी शैक्षणिक उपलब्धियों की और सृजनात्मकता की । परीक्षा में छात्र की छोटी-छोटी असम्बद्ध सूचनाओं को रटने की शक्ति के अलावा और किसी भी योग्यता की जांच नहीं होती तथा यह असम्बद्ध सूचनाओं का समूह भी विद्यालय सत्र की समाप्ति के तुरन्त बाद दिमाग से साफ हो जाता है । फिर तथ्यों का एक नया समूह रटने के लिए दिया जाता है। साल दर साल यही होता रहता है और अन्त में बहुत ही कम तथ्य दिमाग में रह पाते हैं। इसकी सत्यता की जांच प्रथम वर्ष बी.ए. के किसी छात्र से दसवीं विज्ञान के कुछ प्रश्न पूछकर की जा सकती है ।

दूसरी बात, अधिकतर योग्य साक्षात्कारकर्ता इससे सहमत होंगे कि सैकण्डरी, पी.यू.सी. या बी.ए. पास होना कार्यक्षमता के संकेतक के रूप में बहुत ही कम उपयोगी होता है। इसका कारण भी यही है कि परीक्षा केवल रटने की योग्यता की जांच करती है तथा रटने की योग्यता किसी भी काम को समझदारी से कर सकने की योजनाओं में से एक नहीं है ।

तीसरी बात, परीक्षा निकृष्टतम अभिप्रेरण है, क्योंकि यह शीघ्र ही एक मात्र अभिप्रेरण बन जाती है । विद्यालयों में झांकने मात्र से इसका पता चल जाता है । देखिये अध्यापक व छात्रों की उन विषयों में कितनी रुचि है , जिनकी परीक्षा नहीं होती । उदाहरण के लिए दक्षिण भारतीय विद्यालयों में हिन्दी को ही ले लें।

फिर भी ऐसा नहीं है कि मूल्यांकन पर आक्रमण के यही समस्त कारण हों । मूल्यांकन इनसे भी अधिक गंभीर अपराधों के लिए उत्तरदायी है । इसने शिक्षा तन्त्र के हर विभाग को विषाक्त कर दिया है । पाठ्यक्रम को, पाठ्यपुस्तकों को, अध्यापन को, अध्यापकों को और यहां तक कि बालकों को भी ।

मूल्यांकन ने पाठ्यक्रम को कैसे विषाक्त कर दिया है । पिछले तीस वर्षों में धीरे-धीरे, पर लगातार, इस बात पर अधिकाधिक बल देकर कि वे सब विद्यायें, जिनकी परीक्षा हो, अधिक से अधिक वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन योग्य होनी चाहियें । किसी भी सार्थक शिक्षातन्त्र में ऐसे बहुत से क्रियाकलाप होते हैं जो वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन के ढांचे में नहीं समाते । ये सब क्रियाकलाप धीरे-धीरे पाठ्यक्रम से निकाल दिये गये हैं क्योंकि उनकी परीक्षा वस्तुनिष्ठ आधार पर बहुत कठिन है। परिणामस्वरूप अब हम एक ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में हैं जहां यह समझा जाता है कि जिस विद्या की परीक्षा न हो सके, उसे पढ़ाना ही नहीं चाहिये ।

पाठ्येत्तर क्रियाकलाप

इस प्रकार शैक्षणिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण व आनंदप्रद बहुत से क्रियाकलापों को नवीं व दसवीं कक्षाओं में अनिवार्यत: तथा नीचे की कक्षाओं में साधारणत: पाठ्यक्रम से निकाल दिया जाता है । उदाहरण के लिए कला, हस्तशिल्प, संगीत, विचार-विमर्श, लकड़ी का काम, सर्जनात्मक लेखन, कविता (पाठ्यपुस्तकों में आई कविताओं को छोड़ कर) आदि इन क्रियाकलापों में से कुछ हैं । यदि ये विधायें किसी प्रकार पाठ्यक्रम में रह भी जायें तो इनको महत्व नहीं मिलता । अधिक से अधिक इनको व्यासंग (हॉबी) माना जाता है। पाठ्यक्रम का अभिन्न व अनिवार्य अंग इनको कभी नहीं माना जाता । यदि शिक्षा का उद्देश्य सम्पूर्ण व सुखी मानवों का निर्माण है, जो विद्यालय छोड़ने के बाद समाज को भी कुछ दे सकें तो ये विद्यायें अति महत्वपूर्ण हैं । यह सभी शिक्षा-शास्त्री स्वीकार करते हैं ।

इसी प्रकार मूल्यांकन ने पाठ्यपुस्तकों को भी बर्बाद कर दिया है । आज पाठ्यपुस्तक कुछ तथ्यों का संकलन मात्र रह गई है, जिसे बालकों को रटना है । उदाहरण के लिए विज्ञान की पाठ्यपुस्तक के एक पृष्ठ पर मेंढ़क से संबंधित ये तथ्य हो सकते हैं :

मेंढ़क के चार टांगे होती हैं ।

उसके एक लम्बी जीभ होती है ।

वह छोटे कीड़े-मकोड़ों को पकड़ता है ।

सामने के पृष्ठ पर अभ्यास प्रश्न होंगे :

मेंढ़क के ...टांगे होती हैं ।

इसकी एक लम्बी ..... होती है ।

वह छोटे ..... को पकड़ता है ।

खुले प्रश्नों की अनुमति ही नहीं है । क्योंकि बच्चे अलग-अलग उत्तर दे सकते हैं जिससे अंक प्रदान करना सरल नहीं होगा। जैसा कि ग्रैडगाइंड महाशय (जो बहुत व्यवहारिक व्यक्ति थे) कहते हैं, ''हमें इन लड़कियों को तथ्यों के अलावा कुछ नहीं पढ़ाना चाहिए।'' परिणाम स्वरूप लुइसा तथ्यों की शिक्षा प्राप्ति व असफल वैवाहिक जीवन के बाद अपने पिता से कहती है, ''पिताजी यदि मुझे अपनी कल्पना-शक्ति का कुछ भी अभ्यास करने दिया गया होता तो मैं आज लाखों गुणा ज्यादा बुद्धिमान होती ।'' और इतना ही अधिक बुद्धिमान हमारे बच्चे होते ।

मूल्यांकन ने अध्यापन को भी बर्बाद कर दिया है । कल्पना करिये कि विश्वविद्यालय का कोई अध्यापक पाठ्यक्रम में आये किसी लेखक के बारे में कुछ प्रासंगिक तथ्य बताने लगा है। विद्यार्थी उससे यही पूछेंगे, ''सर, क्या यह परीक्षा में आयेगा ?'' और यह अनुभव विश्वविद्यालय के किसी भी अध्यापक को हो सकता है ।

इस मूल्यांकनाभिमुख प्रवृत्ति का परिणाम यह है कि बच्चों के माता-पिताओं, छात्रों और अध्यापकों के जीवन का मात्र एक ही लक्ष्य रह गया है - मूल्यांकन । यदि किसी भी क्रियाकलाप में मूल्यांकन का यह मसाला न हो तो अध्यापक के लिए यह पढ़ा पाना कठिन होता है, क्योंकि बच्चों की उसमें रुचि नहीं होती और उनके माता-पिता ऐसे अध्यापक से गुस्सा होते हैं । ऐसी स्थिति में एक अध्यापक को विचार मात्र में ही एक चिढ़ा हुआ पिता कहता सुनाई देगा, ''यह अध्यापक कर क्या रहा है ? क्यों समय बर्बाद कर रहा है ? इसको चाहिए बच्चों का ध्यान अध्ययन में लगावे ।'' अध्ययन का अर्थ उसकी भाषा में शिक्षा नहीं है, बल्कि पाठ्यपुस्तकों की रटाई तथा परीक्षा है, इसके अलावा कुछ नहीं । यही कारण है कि अच्छा अध्यापन व बालकों को सर्जनात्मक व जिज्ञासु बुद्धि प्रदान करते हुए शिक्षित करना असम्भव हो गया है।

मूल्यांकन ने छात्रों को बर्बाद कर दिया है । इसलिए ही नहीं कि उपरोक्त कारणों - पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों, अध्यापन व अध्यापकों का उन पर बहुत प्रभाव पड़ता है बल्कि इसलिए भी कि बालकों को भी मूल्यांकन की छूत लग गई है । अब उनके लिए एक ही अभिप्रेरण-शक्ति रह गई है- परीक्षा में अधिक अंक पाना। उनके पास पाठ्यपुस्तकों के अलावा किसी भी क्रियाकलाप के लिए समय नहीं है । जिन क्रियाकलापों का अधिक अंक प्राप्त करने में कोई योगदान न हो, वे नापसन्द किये जाते हैं और ठुकरा दिये जाते हैं ।

यही कारण है कि हमारे विद्यालय शिक्षण में किसी भी महत्त्वपूर्ण गुणात्मक सुधार की तब तक संभावना नहीं है जब तक कि शिक्षातन्त्र के गले में कसता हुआ मूल्यांकन का फन्दा काटा न जाये तथा विद्यालयों, पाठ्यपुस्तकों, अध्यापकों व छात्रों को इस बोझ से मुक्त न कर दिया जाये । जब वे इस बोझ से मुक्त हो जायेंगे तभी शिक्षा के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण क्रियाकलापों में ईमानदारी व निडरता से रुचि ले पायेंगे । ◆